

डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 10, द्वितीय महान जागृति

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन हैं जो अमेरिकी ईसाई धर्म पर अपना शिक्षण दे रहे हैं। यह द्वितीय महान जागृति पर सत्र 10 है।

तो, कमरे के सेटअप के बारे में कुछ शब्द। यह इतना छोटा है कि मैं ऐसा करने की कोशिश कर रहा हूँ और अपने नोट्स और सब कुछ डाल रहा हूँ। तो, यह मुझे पागल कर रहा है। इसलिए मैंने सेमेस्टर की शुरुआत में प्रोवोस्ट को ईमेल किया और पूछा कि क्या इस कमरे में एक व्याख्यान-पीठ होने की कोई संभावना है। संगीत भवन से एक संगीत स्टैंड भी ठीक होता।

मेरे नोट्स लिखने के लिए कुछ भी ताकि मैं पिछले पांच या छह हफ्तों से कुश्ती न करूँ। तो कल, उन्होंने मुझे यह व्याख्यान-पीठ भेंट की। इस पर मेरा नाम, रोजर ग्रीन व्याख्यान-पीठ और गॉर्डन कॉलेज की मुहर है।

तो, यह बना रहेगा, और यह गॉर्डन कॉलेज को मेरा उपहार होगा। प्रोवोस्ट ने कहा कि जब मैं रिटायर होऊंगा तो मैं इसे अपने साथ ले जा सकता हूँ। मैंने कहा नहीं, यह इस कमरे के लिए गॉर्डन कॉलेज को मेरा उपहार होगा।

यह यहीं है, यह सुंदर व्याख्यान-पीठ। उन्होंने मुझे नीचे भी सामान रखने के लिए जगह दी है। तो अब, आखिरकार, मैं इस कोर्स में पढ़ाने के लिए तैयार हूँ।

तो, हम तैयार हैं। तो, अरे, अरे, इससे बेहतर क्या हो सकता है? तो हम यहाँ हैं। हम अब तैयार हैं।

तो, इसके लिए गॉर्डन कॉलेज को धन्यवाद। तो हम कहाँ हैं? यह दूसरी कक्षा की जागृति है, व्याख्यान सात, दूसरी कक्षा की जागृति। मैं पाठ्यक्रम के पृष्ठ 13 पर हूँ।

तो मैं यहीं पर हूँ। और हम जागृति के बारे में बात कर रहे हैं, और मैं थोड़ा परिचय देने जा रहा हूँ, और फिर हम इन लोगों के बारे में बात करने जा रहे हैं। लेकिन टिमोथी ड्वाइट के बारे में बात करने से पहले मैं कुछ बातें कहना चाहता हूँ।

तो, वह वहाँ है। हमने पहले उल्लेख किया था कि क्रांतिकारी युद्ध के समय, अमेरिका में धर्म में थोड़ी गिरावट आई थी। ऐसा लगता है कि लोगों की रुचि धार्मिक से ज़्यादा राजनीतिक थी।

तो, अब तक हमने जो देखा है वह यह है कि हमने प्यूरिटन लोगों के बीच एक बहुत मजबूत धार्मिक आवेग देखा है। लेकिन फिर, प्यूरिटन को याद करें; कुछ समय के लिए उनके बीच उस धार्मिक आवेग में कमी आई थी। लेकिन फिर हम 18वीं सदी के मध्य में आते हैं, तब हमें यह पहली महान जागृति मिलती है।

याद रखें कि हमने 18वीं सदी के बारे में बात की थी। इससे अमेरिका में ईसाई धर्म को वास्तविक मजबूती मिली। फिर वह पेंडुलम फिर से कम धर्म और अधिक राजनीति की ओर लौट आया।

खैर, दूसरी महान जागृति, एक अर्थ में, इसका उत्तर है। तो, दूसरी महान जागृति अमेरिका में ईसाई धर्म के पुनरुत्थान की शुरुआत है; हम आमतौर पर दूसरी महान जागृति के लिए लगभग 1800 की तारीख रखते हैं ताकि हम उसे देख सकें। दूसरी बात जो हम इस दूसरी महान जागृति के बारे में ध्यान में रखना चाहते हैं, वह यह है कि आखिरी में, मान लीजिए 1750 से 1800 तक, यानी उस समय की अवधि से।

उस समय के दौरान, क्षेत्रफल तीन गुना बढ़ गया, और जनसंख्या पाँच गुना बढ़ गई। तो, उन 50 वर्षों में, बसाए जा रहे ज़मीन की मात्रा तीन गुना बढ़ गई। यह बहुत है।

हालाँकि, उन 50 सालों में जनसंख्या भी पाँच गुना बढ़ गई। इसलिए, वहाँ जबरदस्त विस्तार हो रहा है। दूसरी महान जागृति ने जो सवाल उठाया वह यह है कि क्या चर्च इस विस्तार के साथ तालमेल बिठा पाएगा या हम इस विस्तार की लड़ाई हार जाएँगे। यह कौन सा होगा? और उन्होंने फैसला किया कि वे चाहते हैं कि चर्च इस विस्तार के साथ तालमेल बिठाए।

वे चाहते थे कि चर्च सभी लोगों के लिए एक मिशन हो और इस नए देश में बढ़ती संख्या के लिए एक मिशन हो। इसलिए, उन्होंने यह निर्णय लिया और इस प्रकार, जैसा कि हम देखेंगे, दूसरी महान जागृति शुरू हुई। अब, हम यहाँ सबसे पहले दूसरी महान जागृति में नेतृत्व के बारे में बात करने जा रहे हैं।

तो यह जागृति है, और इसके चार नाम हैं। पृष्ठ 13, तीन हैं, और फिर चौथा उसके बाद आता है। और फिर हम देखेंगे कि उस जागृति के साथ क्या होता है और फिर हम परिणाम देखेंगे।

ठीक है, मैं जिन चार नामों का ज़िक्र करने जा रहा हूँ, उनमें से पहला और सबसे महत्वपूर्ण नाम है टिमोथी ड्वाइट। वे टिमोथी ड्वाइट के दिन थे।

बहुत महत्वपूर्ण। वे येल विश्वविद्यालय में अध्यक्ष बने। अब, हम पहले ही कह चुके हैं कि जब आप इन विश्वविद्यालयों के बारे में सोचते हैं, तो उन विश्वविद्यालयों के बारे में न सोचें जिनकी आप आज कल्पना करते हैं, जिनमें हजारों छात्र और कई इमारतें वगैरह हैं।

येल अभी भी एक छोटा, काफी घनिष्ठ समुदाय था। हालाँकि, येल ने अपना धार्मिक महत्व खो दिया था। टिमोथी ड्वाइट येल के अध्यक्ष बन गए, और उन्होंने येल के जीवन और येल के छात्रों के जीवन में धर्म को वापस लाने का दृढ़ संकल्प किया।

और इसलिए राष्ट्रपति के रूप में, उन्होंने न केवल येल में कक्षाएं सिखाईं, बल्कि उन्होंने येल में चैपल से सुसमाचार का प्रचार भी किया। सबसे पहले, हम आमतौर पर पहली महान जागृति और दूसरी महान जागृति के लिए 1800 की तारीख रखते हैं। दूसरी महान जागृति वास्तव में येल में टिमोथी ड्वाइट और उनके सुसमाचार के प्रचार के साथ शुरू हुई।

तो यहीं से इसकी शुरुआत हुई। और येल में एक महान पुनरुत्थान हुआ। येल में एक वास्तविक जागृति थी, जैसा कि जोनाथन एडवर्ड्स जैसे लोगों के साथ पहली महान जागृति के समय सच था।

तो, टिमोथी ड्वाइट एक महत्वपूर्ण नाम है, जो एक तरह से इस सबकी शुरुआत करता है। लेकिन फिर तीन अन्य लोग थे जिनका हम उल्लेख करना चाहते हैं। दूसरे और तीसरे नाम ड्वाइट से जुड़े हैं।

दूसरे हैं लाइमन बीचर। और यहाँ लाइमन बीचर हैं, जो आपके पाठ्यक्रम में भी हैं। लेकिन लाइमन बीचर वास्तव में एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं क्योंकि लाइमन बीचर को येल में टिमोथी ड्वाइट द्वारा प्रशिक्षित किया गया था।

तो, लाइमन बीचर येल में टिमोथी ड्वाइट के छात्र थे। लाइमन बीचर ने अपने शिक्षक और अपने गुरु से पुनरुत्थान की प्रेरणा ली। आप बीचर नाम से परिचित होंगे।

आप शायद उनकी बेटी हैरियट बीचर स्टोव से परिचित होंगे। इसलिए, बीचर नाम अमेरिकी जीवन में महत्वपूर्ण हो गया। लाइमन बीचर अब एक उपदेशक के रूप में जाने जाते हैं।

वह एक महान उपदेशक हैं। वह कॉलेज के अध्यक्ष या शिक्षक या कुछ और नहीं हैं, लेकिन वह एक तरह के पादरी हैं जिन्होंने दूसरी महान जागृति लाने में मदद की। इसलिए, हमें लाइमन बीचर पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

मेरा तीसरा नाम नैथेनियल टेलर है। नैथेनियल टेलर उसी समय येल में थे जब टिमोथी ड्वाइट येल के अध्यक्ष और येल में शिक्षक थे। हालाँकि, नैथेनियल डब्ल्यू. टेलर उस समय येल विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे।

और उन्होंने दूसरी महान जागृति को प्रेरित करने में मदद की। उन्होंने खुद, लाइमन बीचर की तरह, टिमोथी ड्वाइट से प्रशिक्षण लिया था। वे येल में ड्वाइट के छात्र रहे थे।

और इसलिए वह दूसरे महान जागरण के इस आवेग को उठाता है, और यह वास्तव में महत्वपूर्ण हो जाता है। अब, चौथा नाम येल या टिमोथी ड्वाइट से जुड़ा नहीं है, लेकिन यह एक ऐसा नाम है जिसका उल्लेख किया जाना चाहिए। और यह अलेक्जेंडर कैम्बेल नाम का एक आदमी है।

अब, हम कुछ ही मिनटों में देखेंगे कि दूसरी महान जागृति दो स्थानों पर हुई। यह उत्तर में हुई, लेकिन यह दक्षिण में भी हुई। अलेक्जेंडर कैम्बेल दक्षिण में एक चर्चमैन थे, और उन्होंने दक्षिणी राज्यों में दूसरी महान जागृति लाने में मदद की।

अलेक्जेंडर कैम्बेल, जैसा कि आप उनकी तिथियों को देख सकते हैं, थोड़े बाद में, लेकिन अलेक्जेंडर कैम्बेल ने दक्षिण में डिसिपल्स ऑफ़ क्राइस्ट नामक एक आंदोलन शुरू किया। और उनका आंदोलन डिसिपल्स ऑफ़ क्राइस्ट का संस्थापक था। और यह आंदोलन दक्षिण में वास्तव में एक जागृति आंदोलन था।

अब, हमारे पास मसीह के शिष्यों और अलेक्जेंडर कैंपबेल के आंदोलन के लिए एक नाम है। और यह एक शीर्षक है, यह एक तरह का धार्मिक शीर्षक है जिसका उपयोग हम उन पहले तीन लोगों के लिए नहीं करेंगे जिनके बारे में हमने बात की है। और जो शीर्षक हम उन्हें देते हैं वह है पुनर्स्थापनावाद।

इसलिए, हमें यह पता लगाने की ज़रूरत है कि पुनर्स्थापनावाद क्या है। अलेक्जेंडर कैंपबेल इसका एक आदर्श उदाहरण है, जैसा कि मसीह के शिष्य हैं। पुनर्स्थापनावाद एक विश्वास है कि आपका संप्रदाय, आपका समूह नए नियम के चर्च को पुनर्स्थापित कर रहा है।

तो, आप न्यू टेस्टामेंट चर्च में पवित्रता देखते हैं, और आप इसे 19वीं सदी में ला रहे हैं। तो, ऐसे समूह हैं जिन्हें हम पुनर्स्थापनावादी समूह कहेंगे जो महसूस करते हैं कि वे न्यू टेस्टामेंट चर्च के सच्चे प्रतिनिधि हैं और न्यू टेस्टामेंट चर्च को एक तरह से जीवित रख रहे हैं जो शायद अन्य चर्च नहीं कर रहे हैं या अन्य समूह नहीं कर रहे हैं। इसलिए पुनर्स्थापनावाद दक्षिण में द्वितीय महान जागृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाता है।

दाईं ओर की यह तस्वीर अलेक्जेंडर कैंपबेल की तस्वीर है। इसलिए अगर मुझे द्वितीय महान जागृति के चार नेताओं को चुनना हो, तो मैं इन चार को चुनूंगा। अब, जब हम द्वितीय महान जागृति के बारे में बात करते हैं, तो हम चार्ल्स ग्रैंडिसन फिन्नी का भी उल्लेख करना चाहते हैं।

मैं इसमें उनका नाम भी जोड़ूंगा। चार्ल्स ग्रैंडिसन फिन्नी। ये चार्ल्स ग्रैंडिसन फिन्नी की तारीखें हैं।

और मैं बस अगली स्लाइड पर जाता हूँ। यहाँ चार्ल्स ग्रैंडिसन फिन्नी की एक तस्वीर है। हम फिन्नी का ज़िक्र इसलिए कर रहे हैं क्योंकि उन्होंने भी एक महान पुनरुत्थान, फिन्नीइट रिवाइवल की शुरुआत की थी।

अब उनकी तिथियाँ बाद की हैं, जैसा कि आप देख सकते हैं। इसलिए सवाल यह है कि हम अभी इसकी चिंता नहीं करेंगे। हम इसे अभी उठाएँगे लेकिन जब हम खुद फिन्नी से मिलेंगे तो हम पूछेंगे।

क्या फिने ने दूसरी महान जागृति को जारी रखा था, या अमेरिकी धार्मिक जीवन में इतना बड़ा अंतर था कि हम फिने के पुनरुत्थान, फिनेइट पुनरुत्थान, तीसरी महान जागृति कहलाते हैं? हमें फिनेइट पुनरुत्थान को कैसे लेबल करना चाहिए? क्या यह ड्वाइट और बीचर और अन्य लोगों द्वारा शुरू की गई बातों का ही सिलसिला है? या क्या कोई अंतर था, और अब फिनेइट पुनरुत्थान वास्तव में तीसरी लहर या तीसरी महान जागृति है? हमें यहाँ इस तरह से समझौता करने की आवश्यकता नहीं है। हमारे पास चार्ल्स ग्रैंडिसन फिने पर एक पूरा व्याख्यान है और आपने चार्ल्स ग्रैंडिसन फिने के बारे में एक लेख पढ़ा है। तो, हम बाद में इस बारे में चिंता करेंगे।

लेकिन यहाँ हम सिर्फ़ मामले को उठाते हैं। साथ ही, लोगों के संदर्भ में, हम पहले ही वेस्ले कोक और एस्बरी के बारे में बात कर चुके हैं। इसलिए मैं सिर्फ़ उन लोगों के संदर्भ में उनका उल्लेख करना चाहता हूँ जो एक तरह से द्वितीय महान जागृति में शामिल रहे होंगे क्योंकि, याद रखें,

फ्रांसिस एस्बरी को अंततः 1784 में नियुक्त किया गया था और वे अमेरिका में मेथोडिज़्म के महान घुमंतू प्रचारक बन गए थे।

इसलिए, हम सिर्फ़ उनका ज़िक्र करना चाहते हैं। तो अब हम दूसरी महान जागृति की अभिव्यक्तियों के बारे में बात करना चाहते हैं। दूसरी महान जागृति की दो बहुत अलग अभिव्यक्तियाँ थीं।

द्वितीय महान जागृति के दो प्रकार के भाग थे, और वे वास्तव में एक दूसरे से काफी अलग थे। लेकिन वे दोनों द्वितीय महान जागृति की छत्रछाया में आते हैं। इसलिए, द्वितीय महान जागृति का उत्तरी प्रकटीकरण, टिमोथी ड्वाइट इसका एक आदर्श उदाहरण है।

और उसकी तिथियाँ भी हैं। लेकिन येल में महान जागृति। अब, येल में महान जागृति के बाद जाहिर है कि अन्य स्थानों पर भी ऐसा हुआ।

यहाँ बाईं ओर टिमोथी ड्वाइट हैं। येल में महान जागृति ने न्यू इंग्लैंड की संस्कृति को बहुत अधिक अपनाया। यह संयमित था।

वहाँ बहुत ज़्यादा भावुकता नहीं थी। वहाँ बहुत बढ़िया उपदेश दिए गए और चर्च के भजनों का बहुत बढ़िया गायन हुआ और इसी तरह की अन्य चीज़ें भी हुईं। और लोग मसीह के पास आए लेकिन बहुत ही संयमित, भावशून्य न्यू इंग्लैंड के तरीके से।

यह टिमोथी ड्वाइट के तहत इस द्वितीय महान जागृति के लिए गॉर्डन कॉलेज की तरह का तरीका है। हालाँकि, इस मामले का तथ्य यह है कि द्वितीय महान जागृति का एक और प्रकटीकरण था और एक पूरी तरह से अलग प्रकटीकरण था। इसका एक दक्षिणी प्रकटीकरण था, जो उत्तरी प्रकटीकरण से पूरी तरह से अलग था।

यह दूसरी महान जागृति की दक्षिणी अभिव्यक्ति की एक तस्वीर है। दूसरी महान जागृति की अभिव्यक्ति शिविर बैठकों की थी। अब, आयोजित होने वाली पहली शिविर बैठक केन रिज, केंटकी में थी।

और यह 1801 में आयोजित किया गया था। केन रिज, केंटकी, 1801. अब, यह एक नई घटना है।

यह कुछ ऐसा है जो पहले कभी अनुभव नहीं किया गया था, जो अमेरिकी चर्च के इतिहास या अमेरिकी धार्मिक इतिहास में पहले कभी अनुभव नहीं किया गया था। कैम्प मीटिंग तब होती है जब लोग शायद दस दिन या शायद कुछ हफ़्ते के लिए एक साथ आते हैं। और आप यहाँ पृष्ठभूमि में तस्वीर में देख सकते हैं कि जहाँ वे रहते हैं वहाँ टेंट हैं।

और बाईं ओर, आप देख सकते हैं कि कोई वहाँ उपदेश दे रहा है, और लोग सुन रहे हैं और इसी तरह की अन्य बातें। इसलिए, शिविर बैठकें द्वितीय महान जागृति की दक्षिणी अभिव्यक्ति बन गईं। लेकिन शिविर बैठकें बहुत अलग थीं।

दक्षिण में अभिव्यक्ति येल की अभिव्यक्ति से बहुत अलग थी। चूँकि दक्षिण में शिविर बैठकें बहुत भावनात्मक थीं, इसलिए वे आम प्रचारकों का इस्तेमाल कर रहे थे।

ये लोग अक्सर अशिक्षित होते थे। वे बाइबल जानते थे, बाइबल की कहानियाँ जानते थे, लेकिन वे आम प्रचारक थे। उनके पास कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं था।

उन्होंने येल वगैरह में टिमोथी ड्वाइट के साथ प्रशिक्षण नहीं लिया था। इसलिए, उनके पास धर्मशास्त्र का ज्ञान नहीं था। लेकिन आम प्रचारक तो हैं।

इन शिविर बैठकों में बहुत भावुकता होती है। बहुत सारे लोग गाते हैं, नाचते हैं और बेहोश हो जाते हैं वगैरह। इसलिए, यह उत्तर में लोगों द्वारा द्वितीय महान जागृति के दौरान अनुभव किए गए अनुभव से बिल्कुल अलग था।

तो, कैंप मीटिंग का अनुभव बहुत ही रोचक रहा। अब, जब भी मैं कैंप मीटिंग के अनुभव के बारे में बात करता हूँ, तो कुछ बातें याद आती हैं। कैंप मीटिंग अभी भी जारी हैं।

दो सौ साल बाद भी कई जगहों पर कैंप मीटिंग होती हैं, सिर्फ दक्षिण में ही नहीं। तो, क्या आप में से कोई कैंप मीटिंग में गया है? आप कहेंगे कि यह कैंप मीटिंग है। दस दिन और दो हफ्ते, बाइबल की शिक्षा, प्रचार और गायन पर ज़ोर दिया जाता है।

तो, क्या आपको ऐसा कुछ जाना-पहचाना लगता है? ठीक है, कुछ लोग। क्या कोई और कैंप मीटिंग में गया है? आपको यह जाना-पहचाना लगता है? तो, आप में से बहुत से लोग कैंप मीटिंग में नहीं गए हैं। मैं गर्मियों के दौरान कैंप मीटिंग में बहुत भाग लेता हूँ।

दो बड़ी बैठकें ओल्ड ऑर्चर्ड बीच, मेन में हैं, जहाँ एक कैंप मीटिंग होती है। और फिर एक और दक्षिण में लेक जुनालुस्का, उत्तरी कैरोलिना में मेथोडिस्ट के साथ है, एक बहुत बड़ी कैंप मीटिंग है जो वहाँ एक साथ होती है। गॉर्डन कॉलेज में जहाँ हम हैं, उसके सबसे नज़दीक कौन सी कैंप मीटिंग है? जो एक बड़ी कैंप मीटिंग थी।

दरअसल, उन्हें बाहर निकलने के लिए थोड़ी अतिरिक्त रेलवे लाइन बनानी पड़ी क्योंकि कैंप मीटिंग में बोस्टन से बहुत सारे लोग आ रहे थे। क्या कोई एस्बरी ग्रोव से परिचित है? आप जानते हैं। आप गर्मियों में वहाँ रहते थे।

आपका दिल धन्य हो। एस्बरी ग्रोव। तो, आप एस्बरी ग्रोव का इतिहास जानते हैं।

इसमें से कुछ। क्या आप हमें इसके बारे में कुछ बताना चाहते हैं, या आप इस व्याख्यान में मदद करना चाहते हैं या नहीं? खैर, एस्बरी ग्रोव यहाँ उत्तर में एक शानदार शिविर बैठक थी। उन्होंने अतिरिक्त रेलवे लाइन निकाली क्योंकि यह उन दिनों बहुत बड़ी थी।

अब उन्हें पहले जैसे नंबर नहीं मिलते। माफ़ करें? यह बढ़िया है। ओह, यह बढ़िया है।

और आप रहते थे, क्या आप कैंपग्राउंड में रहते थे? ठीक है। और क्या आपको चैपल का नाम याद है? यह ई. स्टेनली जोन्स चैपल है जो कई सालों तक भारत में एक महान मेथोडिस्ट मिशनरी थे। ठीक है।

ठीक है। तो, एस्बरी ग्रोव। अगर आप गाड़ी चलाकर नीचे जाएं, तो क्या यह रेलरोड एवेन्यू है? क्राइस्ट चर्च से होकर एस्बरी ग्रोव तक कौन सा एवेन्यू जाता है? मुझे याद नहीं कि वह कौन सी सड़क है।

लेकिन क्या आप में से कुछ लोग जानते हैं कि क्राइस्ट चर्च कहाँ है? अगर आप जानते हैं कि हैमिल्टन में क्राइस्ट चर्च कहाँ है? ठीक है। तो यह वहाँ है। हमारे अपने पिछवाड़े में, हमें एक शानदार कैंप मीटिंग का अनुभव मिला।

और इसका नाम किसके नाम पर रखा गया, बेशक? फ्रांसिस एस्बरी। तो, महान मेथोडिस्ट पुनरुत्थानवादी प्रचारक। तो, शिविर बैठकें दक्षिण तक सीमित नहीं थीं, लेकिन वे बड़ी थीं और अभी भी दक्षिण में बड़ी हैं।

और मुझे नहीं लगता कि एस्बरी में अब उतनी संख्या है जितनी पहले हुआ करती थी। हालाँकि, दक्षिण में या यहाँ तक कि ओल्ड ऑर्चर्ड बीच, मेन में भी शिविर बैठकें अभी भी काफी बड़ी हैं। तो यह बात है।

यह द्वितीय महान जागृति की दूसरी अभिव्यक्ति है, और यह एक बहुत ही उल्लेखनीय अभिव्यक्ति थी। अब, उत्तर के लोगों ने दक्षिण के अनुभव को कमतर आंका क्योंकि उन्होंने इसे बहुत भावनात्मक माना, इन आम लोगों को उपदेश देने दिया जो धर्मशास्त्र नहीं जानते थे और इसी तरह की अन्य बातें। इसलिए, दक्षिणी शिविर बैठक के अनुभव के दौरान जो कुछ हो रहा था, उसे थोड़ा कमतर आंका गया।

लेकिन आपके पास उत्तर और दक्षिण में दो बहुत अलग अनुभव हैं। ठीक है, अब हम जिस चीज में रुचि रखते हैं वह पृष्ठ 14 पर संख्या बी है। और हम जागृति के परिणामों में रुचि रखते हैं।

और मैं छह देने जा रहा हूँ। मेरा मतलब है, आप और भी बहुत कुछ दे सकते हैं। छठे को देने में हमें बहुत ज़्यादा समय लगेगा।

इसलिए मैंने इसे अंत तक बचाकर रखा है। तो, जागृति के परिणाम। ठीक है, जागृति का पहला परिणाम अमेरिकी संस्कृति में पुनरुत्थानवाद में वृद्धि थी।

अमेरिकी संस्कृति को पुनरुत्थानवाद की संस्कृति का हिस्सा होने की आदत हो गई है, प्रोटेस्टेंट दुनिया का हिस्सा। और इसलिए अब हमारे पास पहली महान जागृति है। अब, हमारे पास दूसरी महान जागृति है, पुनरुत्थानवाद में वृद्धि।

और जैसा कि हमने बताया, पुनरुत्थानवाद में वृद्धि बाद में चार्ल्स ग्रैंडिसन फिनी में देखी जाएगी। बाद में, 19वीं सदी के अंत में, यह ड्वाइट एल. मूडी नामक व्यक्ति में देखी जाएगी, जिसके बारे में हमें अभी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन हम उसके पास आएं। और फिर, 20वीं सदी के मध्य में, यह बिली ग्राहम नामक व्यक्ति में देखी जाएगी।

तो, पुनरुत्थानवाद अमेरिकी जीवन और संस्कृति का हिस्सा है, धर्म की प्रोटेस्टेंट अभिव्यक्ति के हिस्से के रूप में, और यह यहाँ हमारे जीवन का हिस्सा बनने जा रहा है। ठीक है, यहाँ दूसरा परिणाम स्वैच्छिक समाज कहलाने वाले नेटवर्क का विस्तार है। स्वैच्छिक समाज।

परीक्षा में आपको इसका थोड़ा सा हिस्सा मिला था, लेकिन स्वैच्छिक समाज, इस मामले में, स्वैच्छिक समाज का मतलब कुछ परियोजनाओं के लिए स्थानीय स्तर पर एक तरह का संगठन है। इसलिए, लोग, जो ईसाई थे वे विश्वासी थे, लेकिन वे लोग भी जो पुनरुत्थान के दौरान विश्वासी बन गए, कुछ परियोजनाओं के लिए स्थानीय स्तर पर संगठित होंगे। और परियोजनाओं का वह स्थानीय स्तर अक्सर क्रॉस-संप्रदायिक होगा।

इसलिए, प्रेस्बिटेरियन और कांग्रेसनल चर्च के लोग, और शायद कुछ मेथोडिस्ट और शायद कुछ बैपटिस्ट, एक साथ आए और एक विशेष परियोजना के लिए जुड़े जिसे वे करना चाहते थे। अब, यह इस बात से निकला कि 19वीं सदी का महान मिशनरी आंदोलन, अमेरिकी मिशनरी आंदोलन, क्योंकि इन स्थानीय परियोजनाओं में सबसे बड़ी थी मिशनरी समाजों का गठन।

और ये मिशनरी सोसाइटी बहुत मजबूत हो गईं। 1810 में पहली बार इसका गठन हुआ। इसे अमेरिकन बोर्ड ऑफ कमिश्नर्स ऑफ फॉरेन मिशनर्स कहा गया।

मूल रूप से, यह कांग्रेसनल और प्रेस्बिटेरियन थे जिन्होंने 1810 में मिशनरी सोसाइटी का गठन किया था। इसलिए यह वास्तव में महत्वपूर्ण हो जाता है। और यह इस संस्था के इतिहास के लिए महत्वपूर्ण बन गया है।

बहुत सालों बाद, 1895 में, इस जगह की स्थापना एक मिशनरी सोसाइटी के रूप में की गई, जो ए.जे. गॉर्डन द्वारा कांगो में मिशनरियों को भेजने के लिए एक मिशनरी प्रशिक्षण स्थल था। इसलिए स्वैच्छिक समाजों, लेकिन विशेष रूप से मिशनरी समाजों का गठन बहुत महत्वपूर्ण है। ठीक है, नंबर तीन शिक्षा पर जोर देता है।

शिक्षा पर जोर। अब, शिक्षा के अंतर्गत, तीन चीजें हैं जिनका मैं यहाँ उल्लेख करने जा रहा हूँ। पहला, शिक्षा पर जोर, लेकिन दूसरा, बाइबल का बहुत बड़ा वितरण।

लोगों के हाथों में बाइबल पहुँचाना। और बाइबल के साथ-साथ, ट्रेक्ट नामक चीज़ें भी होती थीं। अब, ट्रेक्ट अक्सर चार-पृष्ठ के कागज़ के सुसमाचार ट्रेक्ट होते थे जो सुसमाचार की कहानी बताते थे।

तो, बाइबल के साथ-साथ लोगों के हाथों में ट्रैक्ट भी पहुँचाए जाएँगे। लेकिन आप चाहते हैं कि लोग एक बार विश्वासी बन जाएँ, एक बार उनका धर्म परिवर्तन हो जाए, तो वे बाइबल के बारे में साक्षर हो जाएँ। तो यह पहली बात होगी।

दूसरी बात, शिक्षा पर यह जोर, इंग्लैंड में पहले शुरू हुआ था, लेकिन बहुत पहले नहीं, और वह था संडे स्कूल। संडे स्कूल अब चर्चों में शैक्षिक उद्यम बनने जा रहे हैं जो लोगों और बच्चों को पढ़ना सिखाते हैं। तो, वे क्या कर सकते थे? बेशक, बाइबल पढ़ें और बाइबल को समझें। इसके पीछे एक कारण था।

अब, तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण काम अन्य कॉलेजों, विश्वविद्यालयों और सेमिनारियों की स्थापना है। इसलिए, अब समय आ गया है, उन्हें लगता है, कि हमारे पादरियों और अन्य लोगों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। इसलिए, कॉलेज विश्वविद्यालयों और सेमिनारियों की स्थापना की जानी चाहिए।

तो, यहाँ उन चीज़ों की स्थापना की एक और लहर है। और मुझे बस कुछ पर जाना है; मैं उनमें से कुछ सबसे महत्वपूर्ण का उल्लेख करने जा रहा हूँ जो पाए गए थे। एंडोवर सेमिनरी की स्थापना 1808 में कांग्रेसनलिस्टों द्वारा की गई थी।

अब, मेरी पत्नी और मुझे एंडोवर शहर बहुत पसंद है। मुझे नहीं पता कि आप एंडोवर से परिचित हैं या नहीं। हालाँकि, एक चीज़ जो मैंने कभी नहीं की, वह यह पता लगाना है कि एंडोवर में इसकी स्थापना कहाँ हुई थी।

मुझे इस बारे में पक्का पता नहीं है। इसलिए, मैं वास्तव में इसका पता लगाना चाहता हूँ। लेकिन कांग्रेसनलिस्टों ने अपना स्वयं का सेमिनरी स्थापित कर लिया।

हमने प्रिंसटन यूनिवर्सिटी का ज़िक्र किया है, लेकिन इस सेमिनरी की स्थापना 1812 में हुई थी। बेशक, इस यूनिवर्सिटी की स्थापना पहले लॉग कॉलेज के रूप में की गई थी। सेमिनरी की स्थापना 1812 में हुई थी।

सेमिनरी की स्थापना प्रेस्बिटेरियन प्रचारकों को प्रशिक्षित करने के लिए की गई थी। मेरा एक दिलचस्प अनुभव रहा, कहानी लंबी है। मैं MTH की डिग्री के लिए प्रिंसटन गया था।

मैं प्रेस्बिटेरियन नहीं हूँ, लेकिन प्रिंसटन में मेरी एक बहुत ही रोचक क्लास थी, जिसमें ज्यादातर प्रेस्बिटेरियन थे। यह क्लास 1967 के इकबालिया बयान पर थी क्योंकि 1967 के इकबालिया बयान के मुख्य लेखक, जिसने एक तरह से वेस्टमिंस्टर इकबालिया बयान की जगह ले ली थी, डॉ. डोवी नाम के एक प्रोफेसर थे। उन्होंने 1967 के इकबालिया बयान पर एक क्लास ली थी।

इसलिए मैंने सोचा कि उस क्लास में बैठना और प्रेस्बिटेरियन के बीच 1967 के कन्फेशन के बारे में चर्चा सुनना दिलचस्प होगा। यह सिर्फ़ एक साल बाद की बात है। प्रिंसटन में मेरा पहला साल 1968 था।

मैं इस बारे में बहुत निष्पक्ष हो सकता था। वे नहीं कर सके। और इसलिए उस कक्षा में 1967 के उस इकबालिया बयान के बारे में चर्चा बहुत ही दिलचस्प थी।

और कुछ छात्रों ने 1967 के कन्फेशन को पहाड़ से उतरी सबसे बड़ी चीज़ के रूप में देखा। दूसरों ने 1967 के कन्फेशन को प्रेस्बिटेरियन चर्च द्वारा जीवन में की गई सबसे बुरी चीज़ के रूप में देखा। और इसलिए कुछ दिलचस्प बातें थीं। यह मेरे लिए एक मजेदार क्लास थी, क्योंकि मैं इसका एक वस्तुनिष्ठ पर्यवेक्षक था।

लेकिन फिर भी, प्रिंसटन सेमिनरी, मेरे पास प्रिंसटन की कुछ सालों की यादें हैं। 1967 का कन्फेशन प्रेस्बिटेरियन के लिए वेस्टमिंस्टर कन्फेशन का प्रतिस्थापन था। और इसलिए, पूरी कक्षा ने लगभग लाइन दर लाइन कन्फेशन को पढ़ा।

यह एक बहुत लंबा इकबालिया बयान था जिसमें इकबालिया बयान और बाकी सब कुछ के बारे में नोट्स थे। बहुत दिलचस्प। तीसरा, हमने हार्वर्ड का जिक्र किया है।

उनके दिव्य विद्यालय की स्थापना 1816 में हुई थी। लेकिन याद रखें, इसकी स्थापना यूनिटेरियन द्वारा की गई थी। स्वीकारोक्ति एक तरह की आस्था की स्वीकारोक्ति है जो यह बताती है कि उस विशेष संप्रदाय के विश्वासी क्या मानते हैं और किस बात का पालन करते हैं।

इसलिए, हमारे चर्च में हमेशा से ही स्वीकारोक्ति होती रही है। प्रेरितों का धर्म-पंथ अंततः स्वीकारोक्ति के रूप में विकसित हुआ। नाइसीन धर्म-पंथ, चाल्सेडोनियन धर्म-पंथ।

ठीक है। यह आपके द्वारा धारण की जाने वाली बुनियादी मान्यताओं का विवरण है। लेकिन यह सिर्फ इतना ही नहीं है।

यह किसी चीज़ की सिर्फ सैद्धांतिक पुष्टि नहीं है। प्रेरितों के धर्म-पंथ और नाइसीन धर्म-पंथ या चाल्सेडोनियन धर्म-पंथ या वेस्टमिंस्टर धर्म-पंथ को स्वीकार करके, आप अपना जीवन उस धर्म-पंथ को समर्पित कर रहे हैं। आप कह रहे हैं कि यह धर्म-पंथ बहुत महत्वपूर्ण है।

यह पंथ ही सबकुछ है। मैं इस पंथ के अनुरूप अपना जीवन जीने के लिए तैयार हूँ। इसलिए, यह सिर्फ एक सहमति नहीं है।

ओह हाँ, मैं ऐसा मानता हूँ। यह उसके प्रति जीवन भर की प्रतिबद्धता है। यही कारण है कि एक सेमेस्टर के लिए कक्षा में 67 कन्फेशन पर चर्चा करना उन प्रेस्बिटेरियन छात्रों के लिए एक बहुत ही अस्तित्वगत अनुभव था।

क्योंकि क्या मैं इस पंथ के लिए अपना जीवन समर्पित करने जा रहा हूँ या नहीं? क्या इससे मदद मिलती है? हाँ, बिल्कुल। जैसा कि आप कहते हैं, आप प्रेरितों के पंथ पर चर्चा कर रहे हैं। ठीक है।

यह इस पंथ के प्रति किसी तरह की वफ़ादारी होगी। आपने उल्लेख किया कि आपने एक-दूसरे को यह नहीं दिया, क्योंकि प्रेस्बिटेरियन से आपका सिर्फ़ 50 साल का संबंध है। मुझे नहीं पता।

यह एक ऐसी चीज़ है जो आप हैं। ठीक है। खैर, ऐसा करने में हमें पूरा एक सेमेस्टर लग जाएगा।

हम सभी यहाँ प्रेस्बिटेरियन नहीं हैं, इसलिए यह सभी के लिए अस्तित्वगत नहीं होगा। लेकिन वे सैद्धांतिक स्वीकारोक्ति हैं। लेकिन फिर भी, सिर्फ़ सहमति नहीं।

आप इस स्वीकारोक्ति के लिए अपना जीवन दे रहे हैं। आप इस बात पर अपना जीवन दांव पर लगा रहे हैं कि यह क्या कहता है। मेरे पास बोनहोफ़र सेमिनार है, और कुछ लोग बोनहोफ़र में हैं।

बोनहोफ़र में, हम बारमैन घोषणा के बारे में बात करने जा रहे हैं। बारमैन घोषणा वह चीज़ थी जिसके लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने बारमैन घोषणा के लिए अपना जीवन दांव पर लगा दिया।

तो, यही तो स्वीकारोक्ति और घोषणाएँ हैं। हाँ, ये बढ़ी हैं।

अब, एंडोवर नहीं। वहाँ कोई विश्वविद्यालय या कुछ भी नहीं था, लेकिन प्रिंसटन और हार्वर्ड विश्वविद्यालयों में विकसित हो गए थे, एक तरह से जर्मन मॉडल के शोध विश्वविद्यालयों के बाद। इसलिए, वे अब नहीं थे।

वे एक ऐसी जगह थीं जहाँ आप धर्मशास्त्र और देवत्व के पाठ्यक्रम और धर्म के अन्य पाठ्यक्रम ले सकते थे। लेकिन अब वे ऐसे स्थान नहीं थे जहाँ वास्तव में मंत्रियों को प्रशिक्षित किया जाता था। इसलिए, 19वीं सदी में, 19वीं सदी की शुरुआत में, इन सेमिनारियों की स्थापना की गई, जो अक्सर विश्वविद्यालयों से जुड़ी होती थीं, लेकिन उनकी स्थापना विशेष रूप से लोगों को मंत्रालय के लिए प्रशिक्षित करने के लिए की गई थी।

यह एंडोवर के मामले में सच नहीं है। एंडोवर एक अलग विश्वविद्यालय था, लेकिन प्रिंसटन और हार्वर्ड के मामले में यह सच है। और फिर मैं यहाँ सिर्फ़ एक और का जिक्र करूँगा, और वह है, बेशक, येल।

येल में डिविनिटी स्कूल की स्थापना अंततः 1822 में हुई। टिमोथी ड्वाइट ने विश्वविद्यालय में दूसरी महान जागृति का नेतृत्व किया क्योंकि सेमिनरी की स्थापना अभी तक नहीं हुई थी, लेकिन 1822 में, इसे मण्डली प्रचारकों को प्रशिक्षित करने के लिए स्थापित किया गया था। इसलिए, शिक्षा में यह रुचि, लेकिन विशेष रूप से जिसे हम उच्च शिक्षा और सेमिनरी शिक्षा कह सकते हैं, वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण हो गई है।

ठीक है, शिक्षा में रुचि के बारे में अन्य प्रश्न? ठीक है, मैं चलता हूँ। हमें यहाँ एक स्लाइड पर वापस जाना है। ठीक है, शिक्षा में तनाव।

ठीक है, अगला, आपने अपनी रूपरेखा में इन्हें भी शामिल कर लिया है, लेकिन चौथा नैतिक और मानवीय धर्मयुद्ध है। बहुत सारे नैतिक धर्मयुद्ध और मानवीय धर्मयुद्ध हैं। यह दूसरे महान जागरण के परिणामस्वरूप बहुत महत्वपूर्ण होने जा रहा है क्योंकि दूसरे महान जागरण ने इस प्रेममय ईश्वर, अपने पड़ोसी से प्रेम करने पर जोर दिया।

ठीक है, मैं तीन आंदोलनों का उल्लेख करना चाहता हूँ जो व्यापक अमेरिकी संस्कृति में वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण बन गए, लेकिन फिर भी क्या आंदोलन वास्तव में दूसरी महान जागृति की चिंता से शुरू हुए थे? ठीक है, आप पहले वाले से परिचित होंगे, उन तीनों से। पहला एक संयम आंदोलन होने जा रहा है, शराब से पूरी तरह से परहेज़ का आंदोलन, संयम इसलिए क्योंकि बड़े शहरों में, ज़ाहिर है, इन शहरों में काम करने के लिए आने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि हुई थी और शराब के दुरुपयोग की भयानक दुर्दशा थी, इत्यादि।

खैर, दूसरे महान जागरण ने उस पर हमला करना शुरू कर दिया और दूसरे महान जागरण में संयम आंदोलन विकसित किया, जो एक तरह का राष्ट्रीय आंदोलन बन गया। दूसरा एक शांति आंदोलन होगा, जो बहुत दिलचस्प है। हम इसे तब देखेंगे जब हम चार्ल्स ग्रैंडिसन फिने और ओबरलिन कॉलेज में जाएँगे, लेकिन शांति आंदोलन जहाँ हम उम्मीद कर रहे हैं, प्रार्थना कर रहे हैं कि 19वीं सदी दुनिया में शांति और शालोम और ईश्वर की शांति लाएगी और इसी तरह, और इसलिए शांति आंदोलन और चार्ल्स फिने, ओबरलिन कॉलेज, इस पर जोर देने जा रहे हैं।

तीसरा, निश्चित रूप से, हर चीज पर प्राथमिकता लेने जा रहा है। तीसरा, अमेरिका में 19वीं सदी का प्रमुख आंदोलन और लड़ाई होने जा रहा है, और वह गुलामी विरोधी आंदोलन, गुलामी के उन्मूलन के लिए आंदोलन होने जा रहा है। यह अब दूसरे महान जागरण के साथ शुरू होता है, लेकिन जैसे-जैसे हम 19वीं सदी में प्रवेश करते हैं, निश्चित रूप से, अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में, यह एक प्रमुख घटना होने जा रही है, और चर्च इसमें प्रवेश करने जा रहे हैं, और इस पर महान संघर्ष होने जा रहे हैं, लेकिन उन्मूलनवादी आंदोलन, यह बाकी सब चीजों पर हावी होने जा रहा है।

किसी भी अन्य प्रकार का संयम आंदोलन या शांति आंदोलन, उन्मूलनवादी आंदोलन ही वह है जो 19वीं शताब्दी को अमेरिकी सांस्कृतिक जीवन और धार्मिक जीवन में अलग पहचान दिलाने वाला है, इसलिए हम उसमें से बहुत कुछ देखेंगे। ठीक है, यह एक से लेकर, ओह, नंबर पांच तक है। मुझे नंबर पांच नहीं मिला, और यह दूसरी महान जागृति के परिणामस्वरूप कई संप्रदायों में वृद्धि है।

बहुत से संप्रदाय बढ़ते हैं। मैं आपको सिर्फ एक उदाहरण देता हूँ, और वह है मेथोडिस्ट। यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

1784, आइए उस तारीख को लें, 1784, एस्बरी के नियुक्त होने के समय और इसी तरह, उपनिवेशों में संभवतः लगभग 15,000 मेथोडिस्ट थे, 1784, 15,000 मेथोडिस्ट। अब याद रखें कि मेथोडिज्म अभी तक एक अलग आंदोलन नहीं है। यह एक आंदोलन है जो एंग्लिकन चर्च को

फिर से सक्रिय करने की कोशिश कर रहा है, और यह एक आंदोलन है जो पुनरुत्थानवाद और इसी तरह के अन्य पर जोर देता है, लेकिन यह एक संप्रदाय नहीं है, इसलिए 15,000।

दूसरे प्रकार का उदाहरण 1850 है। तो, 1784 में, 15,000 थे। 1850 तक, उपनिवेशों में, पश्चिम में, दक्षिण में, और आगे तक, एक मिलियन से अधिक मेथोडिस्ट थे।

मेथोडिस्ट की संख्या दस लाख से ज्यादा है, यानी 65 साल के भीतर यह संख्या दस लाख तक पहुँच गई है। अब, इस वृद्धि का एक कारण यह भी है कि जॉन वेस्ले की मृत्यु के बाद मेथोडिज्म एक अलग संप्रदाय बन गया है। मेथोडिज्म एंग्लिकन चर्च से अलग हो गया है।

यह एक अलग संप्रदाय है। वास्तव में, कई मेथोडिस्ट संप्रदाय हैं, खासकर इंग्लैंड में, उनमें से कुछ थे। हालाँकि, अमेरिका में मेथोडिज्म को अब अपनी अलग चीज़ के रूप में देखा जाता है, और इसमें वास्तविक अपील है, खासकर फ्रांसिस एस्बरी और घुमंतू मंत्रियों जैसे लोगों की वजह से।

तो, मेथोडिज्म सिर्फ एक उदाहरण है। मैं बैपटिस्ट का उपयोग कर सकता हूँ। मैं प्रेस्बिटेरियन का उपयोग कर सकता हूँ।

मैं कांग्रेगेशनलिस्ट का उपयोग कर सकता था, लेकिन द्वितीय महान जागृति के बाद संप्रदाय बढ़ रहे हैं, पश्चिमी विस्तार और दक्षिणी विस्तार के साथ तालमेल रखने की कोशिश कर रहे हैं। हुआ यह था कि जब वेस्ले अभी भी जीवित थे, तो उन्हें बहुत दुर्भाग्यपूर्ण लगा कि एस्बरी और कोच ने खुद को बिशप कहना शुरू कर दिया। दूसरे शब्दों में, ऐसा लग रहा था कि वे यहाँ एक अलग संप्रदाय बना रहे थे, और वह इसका विरोध कर रहे थे।

उन्होंने वास्तव में उन्हें इंग्लैंड वापस आने के लिए कहा। वे नहीं गए। इसलिए वह वास्तव में इसके खिलाफ थे।

लेकिन तकनीकी रूप से, 1791 में वेस्ले की मृत्यु के बाद तक कोई संप्रदाय स्थापित या गठित नहीं हुआ था। फिर, जब 1791 में उनकी मृत्यु हो गई, तो आप कह सकते हैं कि अमेरिकी मेथोडिस्ट अब खुद को एक संप्रदाय के रूप में देखते हैं। और इंग्लैंड में, संभवतः 1795 तक, इंग्लैंड में संभवतः तीन या चार मेथोडिस्ट संप्रदाय थे जो एंग्लिकन चर्च से अलग हो गए थे।

तो, यह थोड़ा अस्पष्ट है। यह कोई सटीक विज्ञान नहीं है, लेकिन 1791 में वेस्ले की मृत्यु के साथ ही, मेथोडिज्म ने यहाँ और इंग्लैंड में एक संप्रदाय के रूप में खुद को बनाना शुरू कर दिया। हाँ।

हाँ। अब समय आ गया है। धन्यवाद।

हमारे पास एक और सवाल है। वेस्लेयन चर्च की शुरुआत इस देश में गुलामी का विरोध करने वाले चर्च के रूप में हुई थी। तो यह सदी के मध्य की बात है।

और हम वास्तव में वेस्लेयन चर्च के बारे में बात करने जा रहे हैं क्योंकि यह एक गुलामी विरोधी आंदोलन चर्च के रूप में शुरू हुआ था। उन्होंने अपने चर्च का नाम जॉन वेस्ले के नाम पर रखा। तो, हाँ, लेकिन यह एक संप्रदाय बन जाता है।

लेकिन हम अभी इस बारे में बात नहीं कर रहे हैं क्योंकि वे सदी के मध्य तक नहीं बने हैं। ठीक है। भगवान आपका भला करे।

हम यहाँ व्याख्यान को समाप्त करने जा रहे हैं।

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिया गया व्याख्यान है। यह द्वितीय महान जागृति पर सत्र 10 है।